आओ, ख़ुद देख लो 9

फलता-फूलता ईमान

phaltā-phūltā īmān

Faith that Flourishes

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 9]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a modified image of
iessephoto https://pixabay.com/illustrations/wheat-ears-nature-mature-dawn-3781755/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

सियासी या रूहानी ईमान? 1

कच्चे ईमान का बीज 3

ईमान के बीज से नाज़ुक पौधा 4

ईमान की आज़माइश 5

ईमान का फल 6

इंजील, यूहन्ना 4:43-54 8

ईसा मसीह सामरियों के इलाक़े से होकर दुबारा गलील में पहुँच गया। सामरी यहूदियों के दुश्मन थे। तो भी रास्ते में कई एक सामरी उस पर ईमान लाए थे।

सियासी या रूहानी ईमान?

उसे देखकर गलीली ख़ुश हुए।

► **क्यों ख़ुश हुए?**

बहुत-सारे लोग फ़सह की ईद मनाने यरूशलम गए थे। वहाँ उन्होंने उसके अज़ीम काम और बातें देख ली थीं। उन्होंने बड़े जोश से उसे ख़ुशआमदीद कहा।

मगर ईसा मसीह ने उनके जोश से धोका न खाया। वह तो ख़ूब जानता था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती। मक़ामी लोगों का जोश जल्द ही ठंडा पड़ जाएगा। जल्द ही उनकी ख़ुशी काफ़ूर हो जाएगी।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह उस पर ईमान नहीं रखते थे। वह सिर्फ़ अपना काम उससे करवाना चाहते थे। उनका मक़सद रूहानी नहीं था बल्कि सियासी।

► **तो फिर ईसा मसीह लोगों में क्या देखना चाहता था? क्या यह कि वह उसे पीर बाबा मान लें?**

हरगिज़ नहीं!

► **तो फिर वह क्या चाहता था?**

वह चाहता था कि वह उस पर ईमान लाएँ।

► **उस पर ईमान लाने का क्या मतलब था?**

यह कि वह मान लें कि ईसा मसीह मेरा ख़ुदावंद है। वह मुझे नजात दे सकता है। वह मेरे गुनाहों को मिटा सकता है। वह मुझे जन्नत में दाख़िल होने के लायक़ बना सकता है। हाँ, वह मेरी ज़िंदगी तबदील कर सकता है।

जिन सामरियों से उसका पाला पड़ा था उन्होंने यह बात मान ली थी। सामरियों ने इक़रार किया था, "हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।"

चलते चलते ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ क़ाना पहुँच गया। पिछली बार क़ाना में एक मोजिज़ा हुआ था। एक शादी पर पानी मै में बदल गया था।

इस दफ़ा शादी नहीं थी। एक आदमी था। एक आदमी जो सख़्त परेशान था। यह आदमी शाही अफ़सर था। ऐन उसी वक़्त उसका बेटा कफ़र्नहूम शहर में सख़्त बीमार पड़ गया था। कफ़र्नहूम तक़रीबन 30 किलोमीटर दूर था। क़ाना पहाड़ी पर था जबकि कफ़र्नहूम काफ़ी नीचे था। वह झील के किनारे पड़ा था। वहाँ जाने के लिए 500 मीटर उतरना पड़ता था। एक दिन में पहुँचना मुश्किल ही था।

कच्चे ईमान का बीज

जब इस अफ़सर को इत्तला मिली कि उस्ताद गलील पहुँच गया है तो वह भागकर उसके पास आया। उसने थरथराते हुए मिन्नत की, "ज़रा मेरे घर आएँ जो नीचे कफ़र्नहूम में है ताकि मेरे बेटे को शफ़ा मिले। इस वक़्त वह मरने को है।"

हम कह सकते हैं कि यह अफ़सर मसीह के बारे में दूसरे गलीलियों की-सी सोच रखता था। वह सियासी सोच रखता था। लेकिन अब उसका बेटा मरने को था। जिस तरह लोग मदद के लिए पीर के पास जाते हैं उसी तरह वह घबराए हुए ख़ुदावंद के पास भाग आया। जो ईमान ईसा मसीह हर एक में देखना चाहता है वह उसमें कम था। कह लें कि ईमान का बीज ही था। फिर भी बाप का दिल अपने बेटे के लिए धड़क रहा था। जब बेटा मरने को है तो माँ-बाप उसे बचाने के लिए क्या कुछ नहीं करते।

► **ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया?**

उसने एक अजीब-सा जवाब दिया। कई बार ईसा मसीह ऐसे जवाब देता है जिनसे हमें सदमा पहुँचता है। उसने फ़रमाया, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"

► **क्या? यह कैसा जवाब है? ऐसी गुज़ारिश और यह जवाब! यह क्यों?**

प्लास्टिक के सस्ते खिलौने को थोड़ा इस्तेमाल करें तो टूट जाता है। क्या अफ़सर का ईमान भी इसी तरह टूट जाएगा? या क्या ईमान के बीज से मज़बूत पौधा उग आएगा?

लेकिन ईसा मसीह यह बात न सिर्फ़ शाही अफ़सर बल्कि सब सुननेवालों से कर रहा था। ईसा मसीह लोगों को सच्चे ईमान की तरफ़ लाना चाहता है। कि उनका ईमान सियासी न रहे बल्कि रूहानी हो जाए।

ईमान के बीज से नाज़ुक पौधा

मसीह की बात सुनकर शाही अफ़सर का मुँह उतर गया। अपने बेटे की वजह से वह तड़प रहा था। घिघियाने लगा, "ख़ुदावंद आएँ तो सही, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

► **अफ़सर ने ईसा मसीह को क्या कहा?**

ख़ुदावंद।

माँ-बाप जब बच्चे को कुछ हो जाए तो अपनी जान देने को भी तैयार हो जाते हैं। अब बाप के अंदर ईमान के छोटे बीज से नन्हा-सा पौधा उग आया। इसी लिए उसने ख़ुदावंद कहा। अब तक वह अपने हाथ

उसकी तरफ़ फैलाए खड़ा है। ख़ुदावंद की तरफ़। पक्का ईमान तो नहीं है लेकिन एक नाज़ुक पौधा उग आया है। क्या वह और मज़बूत हो जाएगा या मुरझा जाएगा?

ईसा मसीह ईमान बढ़ाने का माहिर डाक्टर है। हमारा ईमान हमेशा कमज़ोर रहता है इसलिए वह महारत से उसे मज़बूत करने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े इस्तेमाल करता है। फिर भी वह हमेशा हमारा दुख-दर्द महसूस करता है। उसे अफ़सर पर तरस आया। उसने फ़रमाया, “जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।”

ईमान की आज़माइश

► **क्या ईसा मसीह ने फ़रमाया कि चलो मैं साथ आता हूँ?**

नहीं। न सिर्फ़ यह बल्कि अफ़सर को एक हुक्म भी मिला। उसे करेगा तो बेटा ज़िंदा रहेगा।

► **वह क्या था?**

जा। मेरे बग़ैर अपने घर जा।

► **क्यों?**

वह अफ़सर का ईमान आज़माना चाहता था। आज़माते वक़्त नक़ली ईमान उखड़ जाता है जबकि सच्चा ईमान और मज़बूत हो जाता है।

► **क्या अफ़सर यह सुनकर ज़िद करने लगा कि आपके बग़ैर मैं नहीं जाऊँगा?**

नहीं, वह चुप-चाप चला गया। ध्यान दें कि उसका ईमान किस तरह बढ़ गया था। पहले ईसा मसीह को साथ आना था। अब वह मान गया कि यह भी ज़रूरी नहीं। काम हो जाएगा। वह अपने घर चला गया।

दोपहर एक बज गए थे जब वह चलने लगा। चलते चलते उसे रास्ते में कहीं रात गुज़ारना पड़ा। अगले दिन वह अभी रास्ते में था कि उसके नौकर उससे मिले। लेकिन यह क्या था? वह ख़ुशी से नाच रहे थे। जब क़रीब पहुँचे तो पुकार उठे, "आपका बेटा ज़िंदा है। वह ठीक हो गया है!"

बाप हैरानी से उछल पड़ा। क्या सच?! मेरा बेटा! ज़िंदा! मेरा लाडला! मेरी आँखों का तारा!

उसने पूछा, "उसकी तबीयत कब सँभल गई?"

नौकर बोले, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।"

यह तो कमाल है! ऐन उस वक़्त जब मसीह ने कहा था कि तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।

ईमान का फल

हम देख चुके हैं कि अकसर गलीलियों का मसीह पर नक़ली ईमान था। वह उससे फ़ायदा उठाना चाहते थे। लेकिन वह यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि वह ख़ुदावंद है। कि वह दुनिया को नजात देनेवाला है।

इसके मुक़ाबले में शाही अफ़सर के ईमान को देखो। पहले वह भी इतना ही समझता था कि ईसा मसीह पीर जैसा है जो मेरे बेटे को शफ़ा दे सकता है। ईमान का बीज। फिर ईसा मसीह ने उसे चैलेंज दिया कि तुम सिर्फ़ मोजिज़े देखने आए हो। इस बात ने उसे मसीह से दूर न किया बल्कि ईमान के बीज से एक नाज़ुक पौधा उग आया। वह ज़ोर-शोर करने लगा : ख़ुदावंद, आएँ तो सही, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए। ईसा मसीह ने उसके साथ जाने से इनकार किया फिर भी वह मायूस न हुआ। उसका ईमान और मज़बूत हो गया।

जब बेटे को शफ़ा मिली तो शाही अफ़सर का ईमान बिलकुल पक्का हो चुका था। ईसा मसीह न सिर्फ़ उसका पीर बन गया जो उसकी मदद कर सके। वह उसका ख़ुदावंद बन गया। वह नजात देनेवाला जो इस लायक़ है कि मैं अपनी पूरी ज़िंदगी उसे वक़्फ़ करूँ।

शाही अफ़सर का ईमान देखकर उसके तमाम घरवाले भी ईमान लाए।

► **रहा एक सवाल : आपका ईमान कैसा है?**

इंजील, यूहन्ना 4:43-54

वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को चला गया। उसने ख़ुद गवाही देकर कहा था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती। अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों ने उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फ़सह की ईद मनाने के लिए यरू-शलम आए थे और उन्होंने सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उसने पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही अफ़सर था जिसका बेटा कफ़र्नहूम में बीमार पड़ा था। जब उसे इत्तला मिली कि ईसा यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके पास गया और गुज़ारिश की, "क़ाना से मेरे पास उतर आएँ और मेरे बेटे को शफ़ा दें। क्योंकि वह मरने को है।" ईसा ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"

शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावंद आएँ, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।"

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने घर चला गया। वह अभी उतर रहा था कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इत्तला दी कि बेटा ज़िंदा है।

उसने उनसे पूछ-गछ की कि उसकी तबीयत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब दिया, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।" फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िंदा रहेगा।" और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।